जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए कट्स ने किसान भवन में लगाया मेला

भास्कर संवाददाता | भीलवाड़ा

कट्स मानव विकास केंद्र की ओर से जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए स्विस सोसायटी फॉर नेचर कन्जर्वेशन के सहयोग से प्रो ऑर्गेनिक परियोजना में किसान भवन में जैविक मेला हुआ। शाखा प्रभारी गौरव चर्तुवेदी ने बताया कि केंद्र समन्वयक गौहर महमूद ने मेले के उद्देश्य बताए।

चिकित्सा विभाग के आरसीएचओ डॉ. सीपी गोस्वामी ने कहा कि रसायन युक्त फसलों एवं सब्जियों के उपयोग से कैंसर, बीपी, शुगर आदि बीमारियां हो रही हैं। पूर्व कृषि अधिकारी बालमुकुंद सेन ने कहा कि वर्तमान में जैविक खेती की आवश्यकता है, क्योंकि रासायनिक खेती के कारण कई प्रकार की बीमारियां फैल रही हैं।

राजदीप परीक कार्यक्रम अधिकारी, कट्स कार्ट जयपुर ने कट्स मानव विकास केन्द्र द्वारा राजस्थान में जैविक खेती के प्रति किए जा रहे कार्यों के बारे में बताया। गोपालसिंह कानावत, डॉ. राजेश छापरवाल, फारूख पठान आदि ने विचार रखे।

स्कूलों में जैविक खेती की जानकारी ले रहे छात्र

रासायनिक खादों से खेती की उर्वरता नष्ट : चतुर्वेदी

कोटा 22 जनवरी। जिले के कई स्कूलों में छात्रों ने जैविक खेती के प्रति रूचि प्रदर्शित करते हुए अपनी पढ़ाई के साथ इसमें स्कूली छात्रों को जैविक खेती के प्रति जागरूक करने के प्रयास राम कृष्ण शिक्षण संस्था ने शुरू कर दिए है।

लॉर्ड कृष्णा सीनियार सैकण्डरी स्कूल पूनम स्कूल,राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सोगरिया एवं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चंद्रेसल में जैविक गार्डन अवलोकन व जागरूकता कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कन्यूमर यूनिटी ट्रस्ट कट्स इंटरनेशनल के परियोजना अधिकारी धर्मेंद्र चतुर्वेदी ने कहा कि रासायनिक खादों व कीटनाशकों के इस्तेमाल से खेती की जमीन का स्वास्थ्य खराब हो चुका है। इससे उत्पन्न अनाज व सब्जियों में जहर के अंश है। इससे बचने का एक ही रास्ता है कि प्राचीन जैविक खेती को पुनः अपनाया जाए। संस्था के मंत्री युधिष्ठिर चानसी ने बताया कि स्कूलों में बच्चों में जगारूकता के लिए मैदान में ही जैविक उद्यान विकसित कराया गया है। इसके लिए स्कूल के स्टाफ ने भी रूचि ली है।

- गोबर की रेवड़ियों को कचरा पाइंट में न बदले- विजयवर्गीय

पर्यावरणविद् बृजेश विजयवर्गीय ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में रेवड़ियां गोबर की खाद का बड़ा स्त्रोत है। इन्हें कचरा पाइंट में न बदला जाए। पॉलीथीन और प्लास्टिक और पॉलीथीन को कचरे में जाने से रोकें। रिड्यूस, रीयूज और रिसाईकल ही इसका समाधान है। पॉलीथीन का कचरा जमीन में जाकर खेती की उर्वरता को नष्ट करता है और जल स्त्रोतों को खराब करता है।

लॉर्ड कृष्ण स्कूल के संचालक संजय शर्मा ने कहा कि जैविक गार्डन के प्रति छात्रों में रूचि होने से किसानों में भी जैविक खेती के प्रति जागरूकता आएगी। सोगरिया स्कूल की वरिष्ठ अध्यापिका मंजूशर्मा,कृष्णा सोनी,सरिता शर्मा ने भी विचार व्यक्त किए। नरेंद्र राठौड़ ने बताया कि छात्रों ने जैविक उद्यान की देखरेख की जिम्मेदारी ले रखी है। युधिष्ठिर चानसी ने बताया कि कट्स इंटरनेशनल ,स्वीडिश सोसायटी फॉर नेचर कंजर्वेशन के तत्वावधान में जैविक गार्डनों का मूल्यांकन किया गया,आगे बेहतर बनाने के लिए सुझाव,एवं सुधार करने का आव्हान किया जिससे बच्चों में जैविक के प्रति धारण मजबूत बने और स्कूलों के जैविक गार्डन में तैयार सब्जियों, फ्लों को मिड डे मील में इस्तेमाल किया जा सके। इसर के साथ गोबर की रेवड़ियों का भी सदुपयोग हो।

स्कुल में जैविक कीचन गार्डन बना कर बच्चों को प्रेरित किया जायेगा

झालावाड़ 24 जुलाई। कट्स सस्थान जयपुर एवं स्वीडीश सोसायटी फॉर नेचर कंजरवेशन के सहयोग से खानपुर तहसील के रा.उच्च प्रा. विद्यालय लाखाखेडी में जैविक कीचन गार्डन तैयार करने के लिए स्कुल के बच्चों व अध्यापको के साथ बैठक की गई।

संस्थान के सचिव नाथू राम चौधरी ने बताया की जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए यह परियोजना राजस्थान राज्य 10 जिलों में संचालित की जा रही हैं। इसी परियोजना के अन्तर्गत 2 सरकारी स्कुल का जैविक गार्डन तैयार करने के लिए चयन किया गया था आपके स्कुल का भी चयन किया गया। इसी परियोजना के माध्यम से ऐसा वातावरण बनाया जायेगा। बच्चों ऐसी प्रेरिणा ले कर अपने माता-पिता व गाँवों

के किसान को समझा सके। बच्चों का एक जैविक कल्ब बना कर किचन गार्डन तैयार किया जायेगा।

बैठक में कट्स सस्थान जयपुर के परियोजना समन्वयक धर्मेन्द चतुर्वेदी, स्कुल के प्रधानार्चाय जितेन्द मीणा, अध्यापिका सुनीता शर्मा, पिन्टू गोतम, मुकुट बिहारी गुर्जर, संस्थान के कोशा. सुश्री अनिता जागिड़ व स्कुल के बालक-बालिकाऐ उपस्थिति रहे।

परियोजना समन्वयक धर्मेन्द चतुर्वेदी ने बताया कि जहाँ प्रकृति व पर्यावरण को संतुलित रखते हुए खेती की जाती है रासायनिक खाद, कीटनाशकों का उपयोग नही करके खेत में गोबर की खाद, कम्पोस्ट खाद, फसल अवषेश, फसल चक्र एवं प्रकृति में उपलब्ध मित्र कीटों, जीवाणुओं एवं जैविक कीटनाषकों द्धारा हानिकारक कीटो एवं बीमारियों से बचाया जा सके।

उपभोक्ताओं को जागरूक होकर सतत् उपभोक्ता संस्कृति अपनानी होगी

विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस पर जैविक उत्पादों की प्रदर्शनी का आयोजन

aamparivartan.com ❑

चित्तौड़गढ़ (निप्र)। वर्तमान में हमें जागरूक उपभोक्ता के बजाय जागरूक एवं स्वस्थ्य ग्राहक के रूप में परिचित होना पडेगा, जो वस्तु को ग्रहण करता है जिसका सामाजिक मानसिक और शारिरीक विकास हो रहा है वह स्वच्छ व्यक्ति उपभोक्ता कहलाता है। उक्त विचार रविवार को विष्व उपभोक्ता अधिकार दिवस के अवसर पर कट्स एवं जिला रसद् कार्यालय के संयुक्त तत्वाधान में कट्स परिसर में आयोजित जिला स्तरीय विचार गोष्टि में स्थाई लोक अदालत चित्तौडगढ के जज प्रहलाद राय व्यास ने मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किये।

श्री व्यास ने सतत् उपभोक्ता और जैविक उत्पाद् विषय को परिभाषित करते हुए बताया कि हमारी जैविक संपदा को बचाने और उनके उचित प्रबन्धन के लिए सतत् उपभोक्ता बनने की हमें आज से ही शुरूआत करनी होगी।

अजमेर विद्युत वितरण निगम के अधिक्षण अभियंता आर.सी. शर्मा कृषि विभाग के उपनिदेशक ओ.पी. शर्मा कट्स के समन्वयक गौहर महमूद उपवन संरक्षक शषी शंकर पाठक कृषि विज्ञान केन्द्र के डॉ रतन लाल सोलकीं ने प्रक्रिया को अपनाने पर किसानों को जानकारी दी।

जैविक उत्पादों की प्रर्दषनी में चित्तौडगढ के नन्द किषोर धाकड, नारायण लाल धाकड, मोहनलाल मेनारिया, फतेहलाल धाकड, प्रतापगढ जिले के मांगीलाल जणवा, राधेश्याम तेली, बंषीलाल धाकड, पारस धाकड, और भीलवाडा जिले के हरिषंकर व्यास, रामेश्वरलाल बलाई, जमनालाल धाकड, द्वारा कसूरी मेंथी, काला चना, गैहु, चना दाल, काचरी बीज, टमाटर, काला गेहु, पपीता, हरि मीर्च, हरा धनिया, हरि मेथी, हल्दी, आंवला, नीबु, मटर, सहित जैविक उत्पादों की प्रदर्शनी से सहभागीयों को जानकारी प्रदान की।

इस अवसर पर बाल कल्याण समिति अध्यक्ष डॉ शुषीला लढढा, नाबार्ड के डीडीएम सचिन बाडेटिया, अजमेर बिद्युत वितरण निगम के अधिकारी के. पी. सिंह, समाजसेवी, छगनलाल चावला, गंगाधर सोंलकीं, पार्षद प्रतिनिधि नरेश धाकड, ने भी विचार व्यक्त किये।

कट्स जयपुर के कार्यक्रम अधिकारी धर्मेन्द्र चतुर्वेदी ने जैविक खेती कार्यक्रम की जानकारी देते हुए सभी प्रतिभागीयों का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम में चित्तौडगढ सहित भीलवाडा और प्रतापगढ जिले के जैविक किसानों ने भाग लेकर जैविक उत्पादों का प्रचार प्रसार किया। कार्यक्रम में 100 से अधिक लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन मदन गिरी गोस्वामी ने किया।

जिला स्तरीय जैविक मेला आयोजित

जोधपुर। ऑर्गेनिक प्रयोजन के अन्तर्गत मरूधर गंगा सोसायटी और कट्स की ओर से सर्किट हाउस रोड़, वेस्ट पटेल नगर स्थित पार्क में जिला स्तरीय जैविक मेले का आयोजन हुआ। कार्यक्रम संयोजक और सेवड़ ऑर्गेनिक के डायरेक्टर दीपक सिंह राजगुरू और मुख्य कार्यकारी भरत कुमार भाटी ने बताया कि मेले में जैविक उत्पादों की लगभग 12 स्टॉले लगाई गई। मेले के उद्घाटन के दौरान काजरी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अरूण कुमार शर्मा, जैविक किसान रतनलाल डागा, उद्यान विभाग के एन. आर. बामणिया, कट्स के प्रयोजनाधिकारी राजदीप एवं विभिन्न जैविक किसान और उपभोक्ता उपस्थित थे। साइकिल यात्रा के दौरान जैविक खेती का सन्देश देने वाले नीरज कुमार प्रजापत ने बताया कि इस आयोजन का उद्देश्य जैविक उत्पादकों एवं उपभोक्तों को आपस में मिलाना है। डॉ. अरूण कुमार शर्मा ने बताया कि ऐसे मेलों के आयोजन से किसान एवं उपभोक्तों के बीच सीधा संवाद होता है। जिससे विश्वसनीयता बढ़ती है और उपभोक्ता किसान के उत्पाद को आसानी से खरीद लेता है। एन. आर. बामणिया ने कृषि विभाग द्वारा जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए चलाई जा रही योजनाओं पर प्रकाश डाला। रतनलाल डागा ने जैविक खेती में अपनाई जाने वाली विभिन्न तकनीकों को साझा किया। संतुसिंह मेड़तिया ने जैविक जल बनाने की विधि की जानकारी दी। दीपक सिंह राजगुरू ने सभी का मार्ग दर्शन किया भरत कुमार भाटी ने बताया कि यह परियोजना राजस्थान के 10 जिलों में चलाई जा रही है। मरूधर गंगा सोसायटी के भीमाराम मुंड़िया ने सभी अतिथियों को तुलसी के पौधे भेंट कर सभी का आभार व्यक्त किया।

किसान ने 15 बीघा जमीन में चार साल से जैविक खेती कर उगाई 28 प्रकार की फसल

रोहित रेगर
सीधा सवाल ▪ छोटीसादडी

उपखंड क्षेत्र के बम्बोरी गांव के किसान ने अपनी 15 बीघा खेती की जमीन पर जैविक खेती कर 28 तरह की फसल उगाकर कमाल कर दिखाया। किसान मांगीलाल शर्मा के अनुसार वे अपनी 15 बीघा जमीन में 4 साल से जैविक खेती कर रहे हैं ताकि महंगी कीटनाशक दवाइयों का छिड़काव से होने वाली बीमारियों से निजात मिल सके। किसान ने अपनी खेती की जमीन में इस तरह की फसल और सब्जियां बो रखी है। जिसमे गेहूं, लहसुन, पत्ता गोभी, फूलगोभी, नींबू, मेथी, कसूरी मेथी, काले गेहूं, जौ, गन्ना, गाजर, मुली, एप्पल के पौधे, धनिया, चने, पालक, प्याज, टमाटर, देशी प्याज, करेला, तरोई, आम के पोधे, जामुन के पौधे, सीताफल आदि खेत मे लगा रखे है। इनकी ड्रीप सिस्टम से सिंचाई करते है। यह सिलसिला चार सालों से चला आ रहा है। किसान मांगीलाल का मानना है कि जैविक खेती से पैदावार जरूर कम होती है। लेकिन इसके फायदे अनेक हैं। जैविक खेती से उगाई जाने वाली सब्जियों में स्वाद भरपूर मात्रा में होता है। किसान प्रतापगढ़ में आयोजित होने वाले जिला स्तरीय जैविक मेले में भाग लेगा।

चित्तौड़ व अन्य जगहों पर बेचता है सब्जी

किसान मांगीलाल जैविक खेती से अपने खेत में पैदा हो रही सब्जियों को निंबाहेड़ा, चित्तौड़ और अन्य जगहों पर मंडियों में बेच रहा है। सब्जियां बेचने के बाद किसान जणवा को अच्छा मुनाफा मिल रहा है।

दूर हुई बीमारी...

किसान मांगीलाल जणवा बताते हैं कि उन्हें खुद को ब्लड प्रेशर व शुगर की शिकायत थी। उन्होंने कहीं जगह इस बीमारी का इलाज कराया। लेकिन फायदा नहीं हुआ तो उसने अपने ही खेत में जैविक खेती करने की ठानी। राजपुरा गांव के जैविक किसान बंशीलाल धाकड़ से कट्स से जानकारियां ली और यूट्यूब और अन्य माध्यमों से जानकारी एकत्रित कर किसान ने अपने ही क्षेत्र में जैविक खेती करने का काम शुरू कर दिया। हालांकि जणवा को शुरुआती दिनों में कई परेशानियां उठानी पड़ी। लेकिन धीरे-धीरे इन परेशानियों का समाधान भी करना सीख लिया। जैविक खेती कर अपने खेत में सब्जियां उगाकर उन्हें सब्जियों का सेवन किया तो किसान जणवा का ब्लड प्रेशर तथा शुगर भी ठीक हुआ।

किसानों को बीज तैयार करने की तकनीक बताई

जोधपुर. मरूधर गंगा सोसायटी एवं कट्स इन्टरनेशनल माणकलाव के संयुक्त तत्वावधान में माणकलाव ग्राम पंचायत में बीज बैंक स्थापना बैठक आयोजित हुई। कट्स के परियोजना अधिकारी राजदीप पारीक ने किसानों को अपने खेत में बीज तैयार करने की विभिन्न तकनीकों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि किसान अपने खेत पर हर फसल का बीज संग्रहण कर उसी बीज को वर्ष दर वर्ष काम में लेता है तो बीज की गुणवता में सुधार भी होता है। मरूधर गंगा सोसायटी के मुख्य कार्यकारी भरतकुमार भाटी ने बताया कि यहां पर विभिन्न फसलों के बीजों का संग्रहण कर सामुदायिक बीज बैंक की स्थापना की गई। जहां से किसान अपने जरूरत के हिसाब से बीज ले सकते हैं। इसके बदले दोगुना बीज तैयार करके वापस देना होगा। जिससे की उसी फसल का बीज किसान के पास भी तैयार हो जाएगा साथ ही साथ बीज बैंक में भी उस बीज की मात्रा बढ़ती रहेगी। सामुदायिक स्तर पर इस तरीके से बीज बैंक स्थापित किए जाए तो दो-तीन साल में किसान के पास स्वयं का बीज तैयार हो जाएगा।

किसानों को दी जैविक खेती की जानकारी

बामनवास. ग्रामसभा में किसानों को जैविक खेती की जानकारी देते पर्यवेक्षक।

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

बामनवास. कृषि विभाग की ओर से शनिवार को ग्राम पंचायत लिवाली के राजीव गांधी ग्रामीण सेवा केन्द्र पर ग्रामसभा में किसानों को जैविक खेती की जानकारी दी गई। कृषि पर्यवेक्षक रूपनारायण गुप्ता ने किसानों को संबोधित कहा कि जैविक खेती वर्तमान की आवश्यकता है। इस तकनीक के माध्यम से कम पानी में अधिक उपज प्राप्त की जा सकती है। वहीं कीटाणु आदि से नुकसान की आशंका भी कम रहती है। किसान थोड़ी सी सूझबूझ के साथ इस खेती के द्वारा अधिक उपज हासिल कर सकता है। इस दौरान उन्होंने किसानों को कृषि विभाग द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका पहल के बारे में भी बताया। उन्होंने रासायनिक खाद की खेती न करने के लिए प्रेरित किया। ग्रामसभा में पूर्व सरपंच हरिप्रसाद क्याल, ग्राम सेवा सहकारी समिति के अध्यक्ष विनोद पालीवाल, कृषक मित्र हरकेश माली, हेमूदास स्वामी, भरतलाल योगी, राधेश्याम, हंसा एवं नानगराम आदि किसान मौजूद रहे।

आयोजन • किसान आज करेंगे लालसोट के जैविक फार्म का भ्रमण

जिला स्तरीय कृषक आमुखीकरण कार्यशाला शुरू

नसं | सवाई माधोपुर

कटस इंटरनेशनल जयपुर एवं जिले की स्वयंसेवी संस्था रूरल डेवलपमेन्ट सोसायटी एण्ड वोकेशनल ट्रेनिंग आर्गेनाइजेशन (रूडसोवाट) के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय जिला स्तरीय कृषक आमुखीकरण कार्यशाला एवं भ्रमण कार्यक्रम का शुभारंभ गौत्तम आश्रम में किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता कटस इंटरनेशनल जयपुर के कार्यक्रम अधिकारी धर्मेंद्र चतुर्वेदी ने की। यह कार्यशाला राजस्थान राज्य में जैविक उत्पादन व उपभोग द्वारा सतत उपभोग व जीवन शैली की संस्कृति का विकास विषय पर आयोजित की गई। कार्यक्रम के आरंभ में संस्था के दिनेश कुमार ने सभी किसानों, समूहों की महिलाओं का स्वागत किया तथा कार्यशाला के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। आलोक अग्रवाल कृषि अधिकारी ने जैविक खाद बनाने के बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा सरकार की कृषि संबधित विभिन्न अनुदानित योजनाओं के बारे में बताया। सहायक कृषि अधिकारी योगेन्द्र कुमार शर्मा ने जैविक खेती का महत्व तथा आवश्यकता पर प्रकाश डाला। धर्मेंद्र चतुर्वेदी ने संस्था के द्वारा किये जा रहे कार्यों के बारे में जानकारी दी। कटस के परियोजना समन्वयक राजदीप पारीक ने जैविक प्रमाणीकरण और विपणन की विधियों के बारे में जानकारी दी। कमल पहाड़िया कृषि अधिकारी ने जैव तकनीक के द्वारा कीट प्रबंधन के बारे में विस्तृत जानकारी दी। हरिप्रसाद योगी समन्वयक विद्युत सहायता केन्द्र ने किसानों को बिजली के क्षेत्र में आ रही परेशानियों को दूर करने के उपायों पर चर्चा की। संस्था के दिनेश कुमार ने किसानों के द्वारा जैविक तैयार करने तथा जैविक के लिये तैयार होने के लिये आ रहे चुनौतियों के बारे में जानकारी दी। शुक्रवार को किसानों को भ्रमण के लिए लालसोट के जैविक फार्म में ले जाया जाएगा।

सवाई माधोपुर। कार्यशाला में जानकारी देते अधिकारी।

थ्री फेज लाइन च
की मांग, कलेक
को सौंपा ज्ञापन

मलारना डूंगर। क्षे
परिषद सदस्य मोती
कलेक्टर को ज्ञापन सौ
सम्बन्धी समस्या के
मांग की है। ज्ञापन
बताया कि बहतेड़ में
संवेदक के कर्मियों ने
डालकर श्री फेज डीप
लेकिन आज तक
लाइन से नहीं जोड़ने
को इसका वांछित
लाभ नहीं मिल पा
फीडर पर बहतेड़
खोहरी, फलसावटा
हुए हैं। ऐसे में आ
फाल्ट होना, डीपी ज
हो गई, जिससे इन
घंटों तक बिजली गु

सफाई की।

जैविक खेती पर आमुखीकरण कार्यशाला

ब्यूरो/नवज्योति, प्रतापगढ़

स्वयं सेवी संगठन कट्स मानव विकास केन्द्र द्वारा स्थानीय सोहन पेलेस एण्ड मेरिज गार्डन में जिला स्तरीय कृषक आमुखीकरण कार्यशाला आयोजित की। कट्स मानव विकास केन्द्र के समन्वयक गौहर महमूद ने बताया कि जैविक खेती को बढ़ावा देने हेतु एस.एस.एन.सी. स्वीडन के सहयोग से चलाई जा रही प्रो-आर्गेनिक परियोजना के तहत आयोजित कार्यषाला में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ आर. के. डामोर ने जैविक खेती का महत्व एवं आवष्यकता पर जानकारी देते हुए कहा कि रसायनिक व कीटनाषक दवाओं से युक्त उत्पादन के सेवन से लोगों के जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। कट्स कार्ट के कार्यक्रम अधिकारी राजदीप पारीक ने कार्यषाला के उद्देष्य पर प्रकाष डालते हुए कहा कि कट्स द्वारा राजस्थान के दस जिलो में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए परियोजना संचालित की जा रही है। उप केन्द्र समन्वयक मदन गिरी गोस्वामी ने परियोजना के तहत प्रस्तावित गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।

प्रतापगढ़। जिला स्तरीय कृषक आमुखीकरण कार्यशाला में किसानों को जानकारी देते स्वयं सेवी संगठन कट्स मानव विकास केन्द्र के प्रतिनिधि।

इस अवसर जैविक जागरूकता अभियान के भंवरसिंह पिलीबंगा, जैविक किसान गोपाल साहू, बंषीलाल धाकड़, जमनालाल गूर्जर व एडवोकेट नरेन्द्र कुमार शर्मा नें भी विचार व्यक्त किये। आरंभ में कट्स के केन्द्र समन्वयक गौहर महमूद नें स्वागत किया। कार्यषाला में प्रतापगढ जिले की सभी पंचायत समितियों के 76 किसानों ने भाग लिया।

जैविक खेती को बढ़ावा देने को लेकर कार्यशाला

सरकारों व स्वार्थ ने उजाड़ी धरती की कोख

जोधपुर। मरुधर गंगा सोसायटी माणकलाव एवं कट्स इंटरनेशनल के संयुक्त तत्वावधान में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसान भवन पावटा में कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रांरभ में सिमरथाराम पथिक ने कार्यालशाला के उद्देश्य बताएं। तत्पश्चात मरुधर गंगा सोसायटी माणकलाव के मुख्य कार्यकारी भारत कुमार भाटी ने बताया कि एक समय था हमारे पूर्वज परंपरागत खेती करते थे और उस खेती से खाद्यान्न की गुणवत्ता बहुत ऊंचे दर्जे की थी लेकिन कुछ दशकों पहले हमारे देश में एक समय खाद्यान्न की भारी गिरावट आई और हमारी सरकारों ने तथा राष्ट्रीय कंपनियों ने मिलकर सब्सिडी देकर किसानों की आदतें बिगाड़ने का काम किया। इसके अंतर्गत अंग्रेजी खाद व अंग्रेजी दवाइयां का अधिकाधिक इस्तेमाल करने से पैदावार तो बढ़ गई लेकिन खाद्यान्न की गुणवत्ता में भारी गिरावट आ गई। इंसान अधिक पैदावार लेने के चक्कर में रासायनिक खाद व दवाइयों का मिलावट कर जहरीला अनाज पैदा करने लगा। इससे खाने वाले लोगों की सेहत में दिनोंदिन कमी आई और व्यक्ति इतना व्यवसाई को गया कि अपने स्वास्थ्य को नजरअंदाज करते हुए ज्यादा से ज्यादा पैदावार बढ़ाने के लिए अपने जीवन को संकट में डाल दिया है। मनुष्य केस्वार्थ ने धरती की कोख उजाड़ दी है।

पानी के लिए होगा तीसरा विश्व युद्ध

कट्स इंटरनेशनल जयपुर के दीपक सक्सेना ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए बताया कि जमीन में जल स्तर दिनों दिन नीचे जा रहा है। ग्लोबल वार्मिंग के वजह से धरती का तापमान बहुत ज्यादा तेजी से बढ़ रहा है आने वाले समय में तीसरा विश्व युद्ध पानी के लिए होगा क्योंकि नदियों का मीठा पानी समुद्रों में जाकर खारा होता जा रहा है। सरकारों द्वारा उचित प्रबंधन नहीं

होने के कारण पानी का संकट बहुत तेजी से मानव जीवन को खतरे में डालने वाला है। इन चुनौतियों से समाधान करने के लिए हमें जैविक खेती परंपरागत खेती को बढ़ावा देना होगा।

खाद्यान्न की गुणवत्ता में गिरावट

राजदीप पारीक ने बताया कि जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए हमें युद्ध स्तर पर एक आंदोलन के रूप में अभियान चलाना पड़ेगा। रासायनिक खेती से जमीन बंजर होती जा रही है। खाद्यान्न की गुणवत्ता में दिनों दिन गिरावट आ रही है। रासायनिक दवाई व खाद के इस्तेमाल से मनुष्य में तरह-तरह की बीमारियां पैदा हो रही है। डॉक्टर अल्लाह नूर ने बताया कि मीडिया जैविक खेती आंदोलन को बढ़ाने के लिए एक मजबूत स्तंभ के रूप में काम कर सकता है।

वैज्ञानिकों व परिवारजनों को देते हैं। नहीं होती, केवल दिन में दो से तीन रखा जा सकता है।

सामुदायिक बीज बैंक

महंगे बीजों की खरीद से मुक्ति, साल दर साल पैदावार में सुधार

राजदीप पारीक,
कृषि विशेषज्ञ

किसान समूह कर सकते हैं सीएसबी की स्थापना

बीजों के वैज्ञानिक भंडारण और वितरण की सुविधा

निशुल्क या सस्ते दामों पर उपलब्ध होते हैं बीज

लुप्त हो रही फसल-किस्मों को बचाने का प्रयास

खेत से बेहतर पैदावार लेने के लिए किसान बीज कंपनियों की मनमानी सहते हुए बीजों पर हजारों रुपए खर्च कर देते हैं। कुछ किसान अपने खेत में बीजों का उत्पादन करते हैं, लेकिन सही प्रक्रिया और व्यवस्था के अभाव में भंडारण नहीं कर पाते। सामुदायिक बीज बैंक (सीएसबी) इन सभी समस्याओं का हल है। ये न केवल गुणवत्तापूर्ण बीजों का उत्पादन व भंडारण करते हैं, बल्कि निशुल्क या कम लागत में बीज भी उपलब्ध कराते हैं। सीएसबी बीजों के उत्पादन, भंडारण, विपणन, लुप्त हो रही फसल व उनकी किस्मों के संरक्षण के साथ बीज बिक्री के एक प्लेटफार्म के रूप में भी काम करते हैं, जिससे किसान की फसल लागत

घटती है और दाम भी वाजिब मिलते हैं। इनकी देखभाल और रखरखाव स्थानीय किसान समुदाय द्वारा की जाती है। इन्हें बनाने का उद्देश्य स्थानीय बीज सुरक्षा को बढ़ाना और बीजों की किसानों तक पहुंच बनाने की है। कहीं कोई देसी जिंस लुप्त न हो जाए, इसके लिए छोटे नमूनों के रूप में बीजों का भंडारण किया जाता है। इस बारे में नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय पादप आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो से मदद ली जा सकती है।

यह है सीएसबी की संचालन प्रक्रिया

सामुदायिक बीज बैंक बनाने के लिए सबसे पहले उचित स्थान का चयन कर आधारभूत ढांचे का निर्माण करते हैं। यह ऐसा स्थान होता है, जहां गांव के अधिकतर किसानों का पहुंचना आसान हो।

सीएसबी में बीज भंडारण की आधुनिक मशीनें, बीज संरक्षण और प्रमाणीकरण की वैज्ञानिक प्रक्रिया काम में आती हैं। यहां भंडारण पात्र, कई तरह की तुला, बीज ड्रायर, बीज ग्रेडर, तापमान व आर्द्रता मापने वाला यंत्र आदि वस्तुओं की जरूरत होती है। वहीं, अंकुरण, भंडारण, शुद्धता और गुणवत्ता की विधियों का इस्तेमाल किया जाता है।

किसानों के समूह में से ऐसे लोगों चयन किया जाता है, जिन्हें बीज उ बीजोत्पादन से जुड़ी गहरी जानका हो। योग्य किसानों का चयन कर विभिन्न जिम्मेदारियां दी जाती हैं।

इसके बाद बीज उत्पादन के लिए चयनित किसानों को अच्छी श्रेणी के बीजों का वितरण किया जाता है। उत्पादित बीजों को किसानों से खरी कर ग्रेडिंग आदि कार्य के बाद उनक संरक्षण किया जाता है। बीज बैंक निगरानी समिति का गठन कर सीएसबी को किसान उत्पादकों और बाजार से जोड़ा जाता है। बीज की खरीद व बिक्री के दौरान बीज की गुणवत्ता का निर्धारण किया जाता है।

किया गया बाकी छह सवारियों को उनकी

महेड़ा अरनोद,सुनीता पुत्री दीपक कुमावत

प्रतापगढ़

नगरी के सभी सामाजिक एवं धार्मिक

करने लगे।

ओर्गेनिक फार्मिंग की ओर किसानों को प्रेरित करने का सषक्त माध्यम है मिडिया

@कांठल की आवाज

प्रतापगढ़। कृषि के क्षैत्र में बढ़ रहे रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाषकों से मानव जीवन को हो रही क्षति एवं पर्यावरण के नुकासन को देखते हुए इस समय कृषि कार्यों में ओर्गेनिक फार्मिंग के बहुत सघन प्रयास किये जा रहे है भारत जैसे कृषि प्रधान देष में इसे बढ़ावा देने के लिए विभिन्न स्तर पर प्रयास किये जा रहे है जिससे भुमि की सजीवता, जल की गुणवत्ता एवं जैव विविधता आदि को बनाये रखते हुए दीर्घकाल तक पर्यावरण एवं वायु को प्रदुषित किये बिना ही टिकाउ उत्पादन प्राप्त किया जा सके। वर्तमान में रासायनिक खेती से उभर रहे दुष्प्रभावों से सदा स्वस्थ्य रहने वाले ग्रामीण भी आज कैंसर, हार्डअटैक एवं ब्लडप्रषैर जैसी घातक बीमारीयों से ग्रस्त होने लगे है। किसानों को जैविक खेती की ओर प्रेरित करने के लिए व्यापक प्रयासों की जरूरत है। उक्त विचार कट्स द्वारा राजस्थान में जैविक खेती को बढ़ावा देते हेतू संचालित प्रो- ओर्गनिक परियोजना के तहत् आयोजित जिला स्तरिय मिडिया कार्यषाला में कृषि विज्ञान केन्द्र प्रतापगढ़ के वैज्ञानिक डा योगेष कन्नौजिया ने व्यक्त किये।

कट्स के सह-समन्वयक मदन गिरी गोस्वामी ने बताया कि प्रतापगढ़ जिले में स्वीस सोसायटी फोर नेचर कन्जरवेषन के सहयोग से पिछले चार वर्षो से चयनीत 20 ग्रामपंचायतो में जैविक खेती के बारे में किसानों को जागरूक करने के लिए चैपाल बैठके, जिला स्तरिय बैठके, जैविक भ्रमण, जैविक उत्पाद मेला, विद्यालयो में जैविक गार्डन और वर्मी कम्पोस्ट पीट जैसी गतिविधियो से जोड़ा गया जिससे कई किसानों ने जैविक खेती की ओर कदम बढ़ाऐ है।

कार्यषाला में अपने विचार साझा करते हुए बारावरदा के प्रगतिषील किसान जमना लाल पाटीदार ने बताया कि वह पिछले चार वर्षो से जैविक खेती के माध्यम से जैविक गेहूँ पैदा कर रहा है जो चालिस रूपय किलो के भाव से बिक रहा है। इस प्रयास में केवीके, कृषि विभाग एवं कट्स का मार्गदर्षन रहा।

इसी प्रकार गोमाना के प्रगतिषील जैविक किसान के गोपाल लाल तेली ने बताया कि तीस बीघा में जैविक खेती के माध्यम से मक्का, गेहू, उड़द, मुंग और हरि सब्जियां का उत्पादन कर रहे है जिससे उनकी क्षैत्र जैविक किसान के रूप में पहचान बन गई है और प्रति वर्ष 70 क्विटल जैविक गेहू 35 रूपये प्रति किलो से बेचते है लोग जैविक गेहूँ उत्पाद की मांग भी करने लगे है। इन किसानों ने जिला स्तर पर मण्डी में अलग से जैविक उत्पाद की स्टॉल लगवाने की मांग रखी जिससे उत्पादन की उचित कीमत मिल सके।

कार्यषाला में किसान उत्पादक संगठन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी शान्ति लाल ड़ागी ने बताया कि वर्तमान में किसान असंगठित एवं अप्रमाणित जैविक खेती कर रहा उसको उचित बाजार एवं किमत नही मिल पा रही है यदि किसान स्वयं अपनी कम्पनी बनाकर एफपीओ के रूप में पंजीकृत होकर जैविक उत्पाद का प्रमाणीकरण करके देष एवं देष के बाहर व्यापार करने से बहुत फायदा होगा।

कृषि विज्ञान केन्द्र के डा. रमेष कुमार डामोर ने बताया कि जैविक खेती देषी खेती का उन्नत तरीका है जहां प्रकृति व पर्यावरण को संतुलित रखते हुए खेती की जाती है इसमें रासायनिक खाद, कीटनाषको का उपयोग नही करके खेत में गोबर की खाद, कम्पोस्ट खाद, फसल अवषेष, फसलचक्र एवं प्रकृति में उपलब्ध पोषक तत्वों को पौधो को दिये जाते है एवं फसल को प्रकृति में उपलब्ध मित्र कीटों, जीवाणुओं एवं जैविक कीटनाषकों द्वारा हानिकारक कीटों एवं बीमारीयों से बचाया जाता है। श्री डामोर ने चिन्ता व्यक्त करते हुए बताया की वर्तमान में किसान अन्धाधून्ध रासायनिक खादो एवं किटनाषकों का प्रयोग कर रहा है जिससे मिट्टी की उत्पादन क्षमता कम हो गई है एवं भुमि बंजर होती जा रही है। समय रहते किसानों को एक अभियान के रूप में जैविक खेती पर पुनः लौट आने के सघन प्रयास करने होगे।

कट्स जयपुर से कार्यक्रम अधिकारी राजदीप पारिक ने बताया कि जैविक खेती के प्रचार - प्रचार एवं आधुनिक तकनीकी किसान तक पहुचाने में मिडीया अहम् भुमिका निभा रहा है और समय-समय पर मिडिया के माध्यम से जैविक खेती से जुडे किसानों के प्रयासो को उजागर किया जावे।

कार्यषाला में मिडीया की तरफ से सुझाव के रूप में बताया कि जिला स्तर पर सरकार के माध्यम से जैविक स्टॉल की व्यवस्था की जावे जिससे किसानों को उचित किमत मिले एवं उपभोक्ताओं को जैविक उत्पाद।

कार्यषाला में गोटारसी के समरथ लाल, जेतलिया के रकमाजी, राजपुरा के बषी लाल धाकड़, कुलमीपुरा के षिव नारायण पाटीदार ने भी अनुभव साझा किये। कार्यषाला में मिडिया प्रमुखो सहित 35 लोगो की सहभागिता रही।

के आदेश दिए हैं।

ऑर्गेनिक क्लब गठित

उदयपुर. रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशक दवाओं के बढ़ते उपभोग के चलते कैंसर, हार्टअटैक, ब्लड प्रेशर, किडनी, शुगर व अन्य जानलेवा बीमारियों के बढ़ते कारणों को लेकर बुधवार को कट्स जयपुर व प्रयत्न समिति के तत्वावधान में सरकारी स्कूलों में ऑर्गेनिक क्लबों का गठन हुआ। कट्स के राजदीप पारीक ने संस्थाप्रधानों की उपस्थिति में विचार व्यक्त किए। इस मौके पर तुलसीदासजी की सराय और जोगी का तालाब स्थित राजकीय विद्यालय परिसर में नवगठित क्लब पदाधिकारियों ने पौधरोपण कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

Scanned with CamScanner

दैनिक लोकजीवन

भीलवाड़ा, 02 मार्च 2020, सोमवार

जैविक खेती आज की महती आवश्यकता - डॉ. गोस्वामी

कट्स ने लगाया जैविक मेला

लोकजीवन न्यूज सर्विस, भीलवाड़ा

कट्स मानव विकास केन्द्र के शाखा प्रभारी गौरव चर्तुवेदी ने बताया कि कट्स संस्थान द्वारा राजस्थान में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए स्वीड्रिस सोसायटी फॉर नेचर कन्जरवेशन के सहयोग से प्रो ऑर्गेनिक द्वितीय चरण परियोजना संचालित की जा रही है और इस परियोजना के तहत जिले में जैविक उपभोग को बढ़ावा देने के लिए किसान भवन में जैविक मेले का आयोजन किया गया, कट्स मानव विकास केन्द्र के समन्वयक गौहर महमूद ने मेले के उद्देश्य के बारे में बताया कि इस जैविक मेले का उद्देश्य जिले में उपभोक्ताओं को जैविक फसलों एवं सब्जियों के प्रति जागरूक करना एवं इनके उपयोग के लिए उनको प्रेरित करना है। आरसीएचओ डॉ. सी पी गोस्वामी

ने कहा कि आज के समय में रासायनिक फसलों एवं सब्जियों के उपयोग से केंसर, बीपी, सुगर एवं कई प्रकार की घातक बीमारियां हो रही है, आज हम सबको जैविक फसलों का ही उपयोग करना चाहिए। साथ ही बालमुकुंद सैन, पूर्व कृषि अधिकारी, कृषि विभाग भीलवाड़ा ने बताया कि आज जैविक खेती की अत्यन्त आवश्यकता है क्योकि आज के समय में रासायनिक खेती के कारण कई प्रकार की बीमारियां फैल रही है। उन्होंने जैविक खेती के महत्व के बारे में बताया। राजदीप परीक, कार्यक्रम अधिकारी, कट्स कार्ट जयपुर ने कट्स मानव विकास केन्द्र द्वारा राजस्थान में जैविक खेती के प्रति किए जा रहे कार्यो के बारे में बताया। साथ की गोपाल सिंह कानावत एफ एल सी, बड़ौदा क्षेत्रिय ग्रामीण बैंक एवं बाल कल्याण समिति भीलवाड़ा के सदस्य डॉ राजेश चापरवाल एवं फारूक पठान एवं भीलवाड़ा जिले के ग्रामीण क्षेत्रों से किसानों ने जैविक मेले में भाग लिया एवं किसानों ने जैविक मेले में जैविक फसलों की प्रदर्शनी लगाई जिसमें जैविक गेंहू, मक्की, चना, दाल, पपीता, टमाटर, मिर्ची आदि फसलों एवं सब्जियों को उपभोक्ताओं को बताए। जैविक मेले में कट्स मानव विकास केन्द्र के राधेश्याम गुर्जर, हेमंत सिंह सिसोदिया, निर्मला पुरोहित एवं राजेश खोईवाल ने भी भाग लिया।

जैविक खेती को बढ़ावा देने पर बल

दौसा @ पत्रिका. महिला दिवस पर रविवार को जिला स्तरीय जैविक उत्पाद मेला कार्यक्रम कषि विज्ञान केन्द्र दौसा में आयोजित किया गया। इसमें जैविक खेती करने वाली महिलाओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र दौसा के प्रभारी डॉ. बी.एल.जाट ने बताया कि महिला दिवस पर महिला कृषकों ने जो उत्साह दिखाया है, वह प्रशंसनीय हैं। जो जिले की जैविक कृषि को आगे बढ़ने में सहायक सिद्ध होगी। उन्होंने कहा कि हमें हर वक्त महिलाओ के सम्मान का ध्यान रखना चाहिए। राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना चुकी प्रगतिशील महिला किसान रूबी पारीक ने जैविक खेती के लाभों के बारे में बताया। पारीक ने कहा कि जैविक खेती से हमें पानी की बचत, शुद्ध हवा, स्वस्थ धरा, गुणवत्ता वाला उत्पाद व उत्पादित अनाज व सब्जियों के दाम भी ज्यादा मिलेंगे। डॉ. बबीता ने कहा कि समाज को हमेशा महिलाओ के सम्मान का ध्यान रखना चाहिए। संस्था निदेशक ओपी पारीक ने बताया कि जैविक उत्पाद की प्रदर्शनियां लगाई गई। सभी महिलाओं का सम्मान किया गया। डॉ. सुनिता ने जैविक कृषि कार्य के लिए प्रेरित किया। कट्स इन्टरनेशनल जयपुर के परियोजना अधिकारी धर्मेन्द्र चतुर्वेदी ने बताया कि जैविक उत्पाद के क्षेत्र में जिले को अग्रणी बनाने में महिलाओं की अहम भूमिका होगी।

Ad closed by Google
Stop seeing this ad
Why this ad?
Advertisement

जागरुकता कार्यशाला

जैविक खेती अपनाने पर दिया जोर

कोटखावदा @ पत्रिका. ग्राम बडोदिया में सोमवार को जैविक खेती कार्यशाला का आयोजन हुआ। कॉर्डिनेटर सत्यनारायण ने उपस्थित लोगों को जैविक खेती का महत्व, उद्देश्य व जैविक खेती के मानव जीवन में लाभ बताए। उन्होंने बताया कि रासायनिक खाद और किटनाशकों से मानव शरीर पर दुष्प्रभाव बढ़ रहे है और कई बीमारियां हो रही हैं। ऐसे में जैविक खैती अपनानी चाहिए और लोगों को इसके प्रति जागरूक करना चाहिए। प्रोग्राम कॉर्डिनेटर धर्मेन्द्र ने जैविक खाद, कम्पोस्ट व जैविक दवा बनाने की विधियां बताई। कार्यशाला की अध्यक्षता बडोदिया सरपंच रामकिशोर गुर्जर ने की। इस दौरान सुरेश शर्मा व घासीलाल मीना भी मौजूद रहे। (निसं)

बडोदिया में जैविक खेती की जानकारी देते अधिकारी व मौजूद ग्रामीण।

भागवत कथा का चौथा दिन

आत्मरक्षा व घरेलू हिंसा से बचाव कई लोग मौजूद थे।

जैविक खेती को बढ़ावा देना जरूरी

खंडार| पंचायत समिति सभागार खंडार में जैविक मेले का आयोजन किया गया। मेले में कृषि अधिकारियों द्वारा जैविक खेती के बारे में किसानों को जानकारी दी गई। इस मौके पर कृषि पर्यवेक्षक घनश्याम बैरवा व पवन प्रजापत द्वारा परंपरागत कृषि परियोजना के बारे में जानकारी देते हुए सरकार के द्वारा जैविक खाद तैयार करने के लिए मिलने वाली मदद के बारे में विस्तृत जानकारी दी। साथ ही सरकारी अनुदान किसान किस प्रकार से प्राप्त कर सकता है, इस पूरी प्रक्रिया के बारे में भी किसानों को समझाया गया। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा किसानों को कृषि उपकरणों के लिए भी अनुदान दिया जाता है। क्षेत्र के किसान सरकार की इस योजना का अधिक से अधिक लाभ उठाए। उन्होंने बताया कि पिछले कई दशकों से खान पान की चीजों में मिलावट और अनाज व अन्य चीजों के उत्पादन में कीटनाशक रसायनों का प्रयोग हो रहा है, जो हमारी सेहत के लिए ठीक नहीं है। वहीं जैविक खाद में हमारी सेहत के सभी जरूरी तत्व मौजूद होते है। ऐसे में सभी किसान अधिक से अधिक जैविक खेती को बढ़ावा दें। इस अवसर पर कई किसान मौजूद थे।

जैविक खेती-सतत् विकास का माध्यम या किसानों के लिए चुनौती

सफल राजस्थान

जयपुर। आज विश्वभर में सतत् विकास को लेकर बड़े-बड़े संगठनों के द्वारा बैठकें तथा चर्चाएं आयोजित की जाती हैं कि सतत् विकास की आवधारणा को कैसे गति दी जाएं। सतत् विकास प्रमुख कारक पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन, खेती, खाद्य सुरक्षा हैं, जिसमें से जैविक खेती एक प्रमुख समाधान है। परंतु जैविक खेती में कुछ भ्रांतियां हैं, जिसकी वजह से यह किसानों के लिए चुनौती बन गई है। 'अन्तर्राष्ट्रीय जैविक कृषि संगठन' के अनुसार जैविक कृषि एक ऐसी उत्पादन प्रणाली है जो कि मृदा, पारिस्थिति की परितंत्रों और लोगों के स्वास्थ्य को बनाए रखती है। यह प्रतिकूल प्रभावों वाले आदानों के उपयोग के बजाय, पारिस्थितिक प्रक्रियाओं, जैव विविधता और स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूलित चक्र पर निर्भर करती है। जैविक कृषि पर्यावरण को लाभान्वित करने के लिए परम्परा, नवाचार और विज्ञान को जोड़ती है और इसमें शामिल सभी के लिए निष्पक्ष सम्बन्धों और एक अच्छी गुणवत्ता वाले जीवन को बढ़ावा देती है। जैविक खेती मुख्यतः चार सिद्धांतों पर आधारित हैं, स्वास्थ्य का सिद्धांत, पारिस्थितिकी का सिद्धांत, निष्पक्षता का सिद्धांत और सुरक्षा एवं देखभाल का सिद्धांत। स्वास्थ्य के सिद्धांत के अनुसार जैविक खेती मृदा, पौधें, पशु, मुनष्य तथा अप्रत्यक्ष रूप से धरती के स्वास्थ्य को सतत् तथा वृद्धि बनाए रखने में सहायक है। इसके अन्तर्गत काम में ली जाने वाली तकनीकों से किसी के स्वास्थ्य पर बुरा असर नहीं पड़ता है चाहे वह जीव जन्तु, पर्यावरण तथा प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष पर्यावरणीय कारक हो। पारिस्थितिकी के सिद्धांत के अनुसार जैविक खेती में किसी भी पर्यावरणीय कारक को नुकसान ना पहुंचाकर उसके साथ छेड़छाड़ नहीं की जाती है। इसका मुख्य उद्देष्य भूमि, पादप पशु, तथा मानव प्रकृति के साथ सामन्जस्य बनाये रखता है। उदाहरण के लिए, फसलों के लिए जीवित भूमि है, पशुओं के लिए प्राकृतिक फॉर्म, मछली और समुद्री जीवों के लिए जलीय पर्यावरण आवश्यक है। निष्पक्षता के सिद्धांत के अनुसार जैविक कृषि का मूल आधार होना चाहिए किस भी जीवन्त प्राणी को स्वस्थ वातावरण तथाअच्छे जीवन यापन का मौलिक अधिकार है। इसके अनुसार धरती पर सभी जीव मात्र को भोजन, पानी, हवा व सुरक्षा उपलब्ध होनी चाहिए तथा इनके लिए सभी के साथ न्याय होना चाहिए। इसका मुख्य उद्देश्य लोगों को उच्च गुणवत्ता के खाद्य एवं अन्य पदार्थों की पूर्ति करना है। सुरक्षा एवं देखभाल के सिद्धांत के अनुसार यह खेती वर्तमान तथा भविष्य की पीढ़ियों के लिए संतुलित वातावरण बनाए रखने में सहायक है। वर्तमान तथा भविष्य की पीढ़ी एवं वातावरण के स्वास्थ्य की रक्षा सुदृढ़ रखने के लिए जैविक कृषि का प्रबन्धन सावधानी एवं जिम्मेदारी से करना आवश्यक है। उपरोक्त तथ्यों के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि यदि हमें इस वैष्विक परिवार को सतत् विकास की ओर ले जाना है तो वर्तमान खेती की प्रणाली को बदलकर जैविक खेती को प्रोत्साहन देना होगा, तभी जैविक खेती सतत् विकास का माध्यम बन सकेगी तथा हम 'वसुधैवकुटुम्बकम्' की अवधारणा को सार्थक कर पाएंगे। परंतु जब तक जैविक खेती से सम्बन्धित सरल तरीके से सम्पूर्ण तकनीकी जानकारी एवं प्रणाली को धरातलीय स्तर पर किसानों को समझाया नहीं जाएगा, तब तक यह किसानों के लिए चुनौती बनी रहेगी। वर्तमान कृषि पद्धति में उच्च उत्पादन को प्राथमिकता दी जाती है, जबकि जैविक खेती में पर्यावरणीय सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा एवं कम लागत को ध्यान में रखा जाता है जिससे शुरूआती वर्षों मे उत्पादन में कमी रहती है, जिसको अगर वास्तविकता से आकलन किया जाए तो कम लागत तथा पानी की बचत से वो फायदेमंद होती है। जैविक खेती से होने वाले दूरगामी फायदों तथा इसकी तकनीकों के बारे में किसान को भी जानकारी है, परंतु कम उत्पादन तथा लालच की वजह से वो इसके अपनाते नहीं हैं। इसके लिए सरकार को एक विशेष नीति के तहत कीटनाषकों एवं उर्वरकों पर दिए जाने वाली सब्सिडी को जैविक खेती की तरफ जोड़ना होगा तथा जैविक खेती के क्षेत्र में निरन्तर अनुसंधान कर नई तकनीकों को विकसित करके धरातल पर उतारना होगा, जिससे किसानों की मानसिकता में परिवर्तन आ सकें और जैविक खेती सतत् विकास का माध्यम बन सके।

राजदीप पारीक
कार्यक्रम अधिकारी
'कट्स' इन्टरनेशनल, जयपुर
मो.: 9461670755

वलोकन कर आदर्श आचार संहिता का पालन
किया। इस अवसर पर कई अधिकारी मौजूद थे।

द्वारा न्यूनतम 75 प्रतिशत तथा स्नातक एवं अ
में छात्रा द्वारा न्यूनतम 60 प्रतिशत, छात्र द्वा

किचन गार्डन का निरीक्षण, बालकों को बताए जैविक खेती के फायदे

भगवतगढ़| किचन गार्डन का जायजा लेते कार्यक्रम अधिकारी।

भास्कर न्यूज| भगवतगढ़

ग्राम पंचायत जटवाडा कलां के राजकीय उच्च प्राथमिक संस्कृत विद्यालय ढूंढा गांव में जैविक कृषि को बढावा देने तथा किचन गार्डन के संबंध में टीम ने निरीक्षण किया। कार्यक्रम अधिकारी सीयूपीएस इंटरनेशनल निशा शर्मा एवं राजदीप पारीक ने विद्यालय में विकसित किए गए जैविक उद्यान का जायजा लिया। उन्होंने विद्यालय के किचन गार्डन का निरीक्षण किया एवं जैविक खेती के बारे में बालकों को बताया। रूडसोवाट के दिनेश बागड़ा एवं कार्यक्रम अधिकारियों ने किचन गार्डन की उपयोगिता बताई।

रजत होंगे दलनायक